भूमण्डलीकरण के दौर में कुशीनगर जिले का लोक रुझानः सन 1991 से सन 2020 तक

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ
से इतिहास विषय में पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध सारांश

शोधार्थी

राजीव कुमार पाण्डेय

नामांकन संख्या–1408/18

शोध निर्देशक

डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय

सहायक आचार्य

इतिहास विभाग
स्कूल ऑफ अम्बेडकर स्टडीज फॉर सोशल साइंसेज
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) (नैकः A++ ग्रेड प्राप्त)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ–226025
उत्तर प्रदेश, भारत

2024

सारांश

अपने अर्थ और गुण-दोषों के लिए मीडिया से लेकर मण्डी तक चर्चित भूमण्डलीकरण समकालीन इतिहास की एक बहु-विषयक, विवादस्पद और बेहद शक्तिशाली ऐतिहासिक प्रवृत्ति है। आधुनिक भूमण्डलीकरण का पहला और प्रधान अर्थ है एक विश्व अर्थतंत्र और विश्व बाजार का निर्माण, जिससे प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को अनिवार्य तौर से जुड़ना होगा। दूसरा मतलब है दुनिया की राजनीति और प्रशासन को इसी अर्थतंत्र और बाजार की जरूरतों के हिसाब से संचालित करने की परियोजना। तीसरा मतलब है कंप्यूटर, इन्टरनेट और संचार के अन्य आधुनिकतम साधनों के जरिये दुनिया में राष्ट्रों, समुदायों, संस्कृतियों और व्यक्तियों के बीच फासलों का कम से कमतर होते जाना। मार्शल मैक्लुहान इसे 'वैश्विक गाँव' की एक विशिष्ट प्रक्रिया तथा अनुभव से जोड़ते हैं, जिसे भूगोलवेत्ता डेविड हार्वे द्वारा देश–काल संपीडन की संज्ञा दी जाती है जो हमारी सामाजिक कल्पना के अभूतपूर्व सीमा विस्तारण के रूप में भी समझा जा सकता है। चौथा मतलब है उपग्रही टेलीविजन तथा सिनेमाऔर अब स्मार्ट फोन के स्क्रीन की मदद से एक भूमण्डलीय संस्कृति की रचना करना। अपने पांचवें अर्थ में भूमण्डलीकरण सार्वजनिक अवतरण है जो किसी ख़ास घटना या परियोजना की बजाय स्वयं समकालीनता को परिभाषित करता है। इस अमूर्त स्तर पर यह इतिहास के युगबोधक प्रत्यय की भूमिका में सामंतवाद, पूँजीवाद, आधुनिकता, विकास जैसे विचारों तथा अवधारणाओं की श्रेणी में पहुँच जाता है। संक्षेप में कहें तो अपने सबसे व्यापक रूप में भूमण्डलीकरण वर्तमान युग में हमारे आज का नाम है। यह भी कहा जाता है कि भूमण्डलीकरण के रूप में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अपने चरम पर पहुँच गई है और अब सारा जगत एक सांचे में ढल रहा है।

भूमण्डलीकरण और उससे जुड़ी बहस विपरीत ध्रुवों पर बटी हुई है। एक लोकप्रिय मत के अनुसार भूमण्डलीकरण बाजारों, राष्ट्र-राज्यों और प्रौद्योगिकियों का एक निष्ठुर एकीकरण की प्रक्रिया है। जबकि विरोधी मत इसे आर्थिक उदारीकरण की एक वैचारिक परियोजना कहता है। कुछ लोग महसूस कर रहे हैं कि विश्व को कुछ नया हो रहा है तथा हम एक "वैश्विक युग' में प्रवेश कर रहे हैं। जबकि 'सन्देह वादी' प्रतिक्रिया के अनुसार इस चमक में नया कुछ भी नहीं है बल्कि यह युगों पुराना पूंजीवाद ही है। कुछ इस नई

स्वतंत्रता की प्रशंसा कर रहे है, जो लोगों के जीवन को बेहतर बनाता है। जबकि कुछ असमानता, पर्यावरण तथा स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता व्यक्त करने के लिये भूमण्डलीकरण शब्द का बड़े पैमाने पर प्रयोग कर रहे है। कुछ के अनुसार भूमण्डलीकरण सांस्कृतिक एकरूपता की ओर ले जा रहा है, जबकि विरोधी मत के अनुसार विश्व वास्तव में सभ्यता के खेमों में बट रहा है।

15 अगस्त 1947 को भारत ने एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में स्वतंत्रता प्राप्त की, जबकि 24 जुलाई 1991 को भारत ने उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और निजीकरण के रूप में एक ऐतिहासिक कदम उठाया, जिसे आर्थिक आजादी कहा गया । यह वह समय था जब भारत के हर कोने में, यहाँ तक कि सबसे दूरस्थ गाँवों में भी, वैश्विक प्रभावों का आगमन होने लगा। कुशीनगर जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी इन प्रभावों की गूंज सुनाई देने लगी। यह वैश्विक परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से भी गाँवों के जीवन को गहराई से प्रभावित किया।

भूमण्डलीकरण धीरे-धीरे गाँव देहात के सामाजिक ताने-बाने को बदल रहा है। ग्रामीण जीवन, जो कि लंबे समय तक स्थिर और पारंपरिक ढांचे में बंधा हुआ था, अब वैश्विक ताकतों से प्रभावित हो रहा है। रोजगार के नए अवसर, शिक्षा के नए विकल्प, और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार जैसे कारकों ने ग्रामीण जीवन को बदलना शुरू किया। वहीं, बाजार की नई ताकतें, उपभोक्तावाद, और शहरीकरण ने पारंपरिक मूल्य और जीवन शैली को चुनौती दी है। स्थानीय शिल्प, खेती, और पारंपरिक व्यवसाय, जो कभी ग्रामीण जीवन की धुरी थे, अब वैश्विक बाजार के दबाव में हैं।

शोध अध्ययन का क्षेत्र

कुशीनगर, भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण जिला है, जो भूमण्डलीकरण के इस व्यापक परिदृश्य में एक दिलचस्प अध्ययन का क्षेत्र बनता है। "ग्लोबल गांव" से जुड़ाव के बाद जन-सांख्यिकीय लाभांश, नए अवसर तथा सकारात्मक परिवर्तन और परिणाम तलास रहे भारत में कुशीनगर जिले के लोक रुझान के विविध आयामों को समझने के लिए इस भौगौलिक क्षेत्र का चयन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी लगभग 95% जनसंख्या ग्रामीण है और शेष 5% शहर या कस्बों में निवास करती है। कुशीनगर का सामाजिक-आर्थिक इतिहास उस समाज की तस्वीर प्रस्तुत करता है जिसे

मार्क्स ने अपने घोर प्राच्यवादी आग्रह के साथ 'अपरिवर्तनशील विशिष्ट एशियाई उत्पादन प्रणाली' कहा था, जिसे लंबे समय तक अपरिवर्तनीय और पारंपरिक माना गया था। लेकिन 1991 में उदारीकरण के आगमन के साथ, वैश्विक शक्तियों ने इस क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन की कोशिशें शुरू कीं। पॉल रोसेनस्टीन-रोडन के 'बड़े धक्के' की मांग के अनुरूप, यह क्षेत्र अब उस विकास के रास्ते पर बढ़ने की कोशिश कर रहा है जो इसे विश्वव्यापी आर्थिक और सामाजिक नेटवर्क से जोड़ता है।

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि भूमण्डलीकरण के दौर में कुशीनगर के लोक रुझान का गहन विश्लेषण किया जाए। इस शोध में यह देखा जाएगा कि क्या स्थानीय लोग इन अवसरों का लाभ उठा पाए, और यदि नहीं तो इसके पीछे के कारण क्या रहे। साथ ही, जिन लोगों ने इन अवसरों का लाभ उठाया, उनके जीवन में किस प्रकार के सुधार हुए, इसका विश्लेषण किया जाएगा। उत्पादन प्रणाली में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करके यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि भूमण्डलीकरण ने कुशीनगर के उत्पादन ढांचे को किस प्रकार से प्रभावित किया। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि सन 1991 में आर्थिक उदारीकरण के बाद कुशीनगर जिले में राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों की गति और दिशा क्या और कैसी रही। स्त्री और पुरुषों के रुझान में अगर कोई अंतर रहा है तो उसका विश्लेषण करना इस शोध का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। कुशीनगर जिले की जातीय और वर्गीय संरचना के आधार पर रुझानों में अंतर का विश्लेषण करना भी इस शोध का एक प्रमुख बिंदु होगा। ग्रामीण सत्ता संरचना में भूमण्डलीकरण के प्रभाव से आए परिवर्तनों का आकलन करना भी इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। यह देखा जाएगा कि क्या भूमण्डलीकरण के कारण सत्ता के केंद्र बदले, और किस प्रकार यह सत्ता संरचना स्थानीय स्तर पर सामाजिक और राजनीतिक जीवन को प्रभावित कर रही है।

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध न केवल कुशीनगर जिले के लोक रुझानों को उजागर करेगा, बल्कि वैश्विक और स्थानीय संदर्भों के बीच का जटिल संबंध भी स्थापित करेगा। यह शोध कुशीनगर के क्षेत्रीय इतिहास और लोक रुझानों को समझने के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण योगदान देगा। यह न केवल स्थानीय सामाजिक और

सांस्कृतिक परिदृश्य में बदलावों को उजागर करेगा, बल्कि व्यष्टि इतिहास (माइक्रो-हिस्ट्री) के माध्यम से कुशीनगर के निवासियों के व्यक्तिगत और सामुदायिक अनुभवों को भी सामने लाएगा। टोटल हिस्ट्री के दृष्टिकोण से यह शोध ग्रामीण समाज के हर पहलू पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, और आर्थिक परिवर्तन शामिल हैं। फ्रांस के अनाल्स स्कूल के प्रमुख विद्वानों जैसे लूसे फेवेब्र और मार्क ब्लाक जैसे इतिहासकारों ने मानसिकताओं के इतिहास पर जोर दिया था। यह शोध कार्य भी इन अपेक्षाओं को भी पूरा करने की एक छोटी सी कोशिश करेगा। शोध का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह कुशीनगर की व्यावहारिक समस्याओं के समाधान में भी मददगार साबित होगा। यह शोध पूर्वाग्रहों के निदान और निवारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। चूंकि यह अध्ययन स्त्री-पुरुष, जातीय, और वर्गीय तुलना करेगा, अतः इससे जेंडर मुद्दों तथा जातीय और वर्गीय मुद्दों के भूमण्डलीकरण के आयामों को भी समझने में मदद मिलेगी।

परिकल्पना

शोधार्थी की यह परिकल्पना है कि भूमण्डलीकरण के प्रभाव ने कुशीनगर जिले में जनसांख्यिकीय, सामाजिक, और आर्थिक परिदृश्यों को नए तरीके से ढाला है, जिससे परंपरागत मूल्यों और जीवनशैली में व्यापक बदलाव आया है। भूमण्डलीकरण ने कुशीनगर के ग्रामीण समाज में नए सपनों और आकांक्षाओं का पुनर्जीवन किया है। स्टिगलिट्ज के तर्क के अनुसार, भूमण्डलीकरण असमानता को न केवल बनाए रखता है बल्कि इसे बढ़ावा भी देता है। इस शोध यह परिकल्पना करता है कि कुशीनगर में भी आर्थिक असमानता बढ़ी है, असमानता का ग्रामीण समाज की जाति, वर्ग और सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। शोध यह परिकल्पना करता है कि कुशीनगर के ग्रामीण समाज में पलायन ने परिवारों और सामाजिक संरचनाओं को कमजोर किया है। पलायन ने न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बदला है, बल्कि इससे सामाजिक और सांस्कृतिक धारणाओं में भी गहरा बदलाव आया है।

शोध प्रविधि

इस शोध में विभिन्न शोध विधियों का प्रयोग किया जाएगा ताकि कुशीनगर जिले में 1991 से 2020 तक के दौरान हुए लोक रुझानों और सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का समग्र

अध्ययन किया जा सके। निम्नलिखित विधियाँ इस शोध के लिए उपयुक्त मानी गई हैं: सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग कुशीनगर जिले की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति का विश्लेषण करने के लिए किया गया। स्थानीय जनता, विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, से प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई है। कुशीनगर जिले की सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक स्थिति को समझने के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाएगा। इसके तहत शोधार्थी सरकारी अभिलेखों, रिपोर्टों, और सांख्यिकीय आंकड़ों का अध्ययन किया है। इस शोध में आगमनात्मक तर्क पद्धति का प्रयोग करके सर्वेक्षण और अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारी से निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है। वृहद निष्कर्षों की पुष्टि करने के लिए निगमनात्मक जाँच पद्धति का उपयोग किया गया है। यह शोध एक विशुद्ध मूल शोध है, जो काल और प्रवृत्ति आधारित है, अर्थात् यह ऐतिहासिक और सामाजिक शोध है।

शोध का निष्कर्ष

इस चहुँव्याप्त, बहु-विषयक, विवादस्पद और बेहद शक्तिशाली ऐतिहासिक प्रवृत्ति भूमण्डलीकरण के दौर में कुशीनगर जिले में भी निश्चित तौर पर गहरे सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं। वैश्विक दबावों ने असुरक्षा की भावना को बढ़ावा दिया। सामाजिक – आर्थिक आयाम के कुछ क्षेत्रों में सकारात्मक रचनात्मकता दिखी तो कुछ क्षेत्रों में रचनात्मक विध्वंस देखने को मिला, वहीं कुछ क्षेत्रों में पीड़ा जनक बदलाव भी देखने को मिले हैं।

कुशीनगर जिले में भूमण्डलीकरण की आरंभिक पदचाप डंकल प्रस्ताव के रूप में राजनीतिक विरोधियों के मुहावरों में सुनाई दी जिससे कुशीनगर जैसे कृषि प्रधान क्षेत्रों में गहरी चिंताएँ उत्पन्न हुई। अंतरराष्ट्रीय व्यापार बाधाओं को कम करने और सरकारी सब्सिडी घटाने के प्रस्ताव ने किसानों में असुरक्षा की भावना बढ़ाई। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण उनकी आजीविका संकट में पड़ने का डर प्रमुख था। वैश्विक बाजार का दबाव छोटे व्यापारियों और किसानों के लिए गंभीर चिंता का विषय बना रहा। उन्हें डर था कि अंतरराष्ट्रीय वस्तुएं स्थानीय बाजारों में प्रवेश कर जाएंगी, जिससे उनकी आजीविकाएँ और उत्पादों के उचित मूल्य खतरे में पड़ सकते हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण की आशंका ने ग्रामीण समाज में यह डर पैदा किया कि ये सेवाएं महंगी और दुर्लभ हो जाएंगी, जिससे सामाजिक असमानता और बढ़ेगी। कहा गया कि खासकर गरीब वर्ग के लिए ये सेवाएं अप्राप्य हो सकती हैं। कुशीनगर में हुए सर्वेक्षणों

से भी यह स्पष्ट हुआ कि 83% लोग चाहते थे कि सरकार आम आदमी को बाजार की अनियमितताओं पर न छोड़े। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण समाज में सरकार की भूमिका को आर्थिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

लेकिन इन आशंकाओं को धता बताते हुए भूमण्डलीकरण ने कुशीनगर जिले में नवीन अवसरों को जन्म दिया। कुशीनगर की गरीबी ने लोगों को शहरों और विदेशों में रोजगार की तलाश में धकेला। प्रवासी मजदूरों द्वारा भेजे गए धन ने ग्रामीण इलाकों में नगदी प्रवाह बढ़ाया, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापार, सेवा, और निर्माण क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा हुए, जिससे जीवन स्तर में सुधार हुआ। भूमण्डलीकरण ने कुशीनगर में कृषि के नवाचार को बढ़ावा दिया। उन्नत बीज, कृषि रसायन, और सिंचाई तकनीकों ने उत्पादन में वृद्धि की। किसानों को प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान करने से उनकी उत्पादकता में सुधार हुआ। जैविक खेती और निर्यात योग्य फसलों का उत्पादन बढ़ा, जिससे किसानों को बेहतर आर्थिक अवसर प्राप्त हुए। प्रवासी मजदूरों द्वारा भेजी गई रकम का बड़ा हिस्सा छोटे व्यापार, मकान निर्माण, कृषि सुधार, और बच्चों की शिक्षा में निवेश हो रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि आई है। इससे कई परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई और सामुदायिक विकास को बल मिला। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में वृद्धि हुई है। निजी और सरकारी संस्थानों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुआ। स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता ने भी ग्रामीण इलाकों में जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद की। युवाओं को शिक्षा और रोजगार के नए अवसर मिले, जिससे वे नए करियर की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हालांकि, उन्हें इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए कई संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है। सर्वे रिपोर्ट बताती है कि 49% लोगों ने माना कि जीवन सरल हो गया है, जबकि 45% ने असहमति जताई। पैसा कमाने के अवसरों के संदर्भ में 45% लोगों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, जबकि 48% लोगों ने इसे चुनौतीपूर्ण माना। यह दर्शाता है कि अवसरों के वितरण में असमानता है और सभी लोगों तक इसका लाभ समान रूप से नहीं पहुंच पाया है।

दरअसल अनुमान के मुताबिक ही भूमण्डलीकरण का सम्पूर्ण प्रभाव चंगा नहीं बल्कि चुनौतीपूर्ण रहा। भूमण्डलीकरण के कारण वैश्विक बाजारों के खुलने से स्थानीय किसानों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। पारंपरिक कृषि विधियाँ अब वैश्विक मांगों के अनुसार नहीं हैं, जिससे छोटे और सीमांत किसानों को नकदी

फसलों की ओर बढ़ना पड़ा। इसका परिणाम खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता में गिरावट के रूप में देखा जा सकता है। इन चुनौतियों के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। कुशीनगर की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरें भूमण्डलीकरण की चपेट में आ गई हैं। वैश्विक उपभोक्तावाद के प्रभाव से पारंपरिक कलाएँ, हस्तशिल्प, और लोक संगीत लुप्त होने के कगार पर हैं। सांस्कृतिक पहचान कमजोर हो रही है, और नई पीढ़ी के बीच अपने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता की कमी देखी जा रही है। भूमण्डलीकरण के बाद भी जातिगत और वर्गीय भेदभाव की समस्याएँ बरकरार हैं। उच्च वर्गों को भूमण्डलीकरण से अधिक लाभ हुआ है, जबकि अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए अवसर सीमित रहे हैं। यह असमानता ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट है, जहाँ भूमण्डलीकरण के लाभ समान रूप से नहीं पहुँच पाए हैं। सर्वे के आकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि सामान्य वर्ग के बहुतायत लोगों ने जीवन में सुधार महसूस किया है, जबकि एससी और एसटी वर्ग के अधिकांश लोगों ने जीवन में कठिनाई का अनुभव किया है।

भोजपुरी लोक संस्कृति ऐतिहासिक परिघटनाओं और सामूहिक अनुभवों से जुड़ी रही है। इसमें पूजा-पाठ, खान-पान, वेशभूषा, विधि-निषेध, और पूर्वाग्रह-अनुष्ठान जैसे लोकजीवन से जुड़े विभिन्न आयाम समाहित हैं। भूमण्डलीकरण के प्रभाव से इनमें कई परिवर्तन देखने को मिले हैं, खासकर परंपराओं का शहरीकरण और व्यावसायीकरण हुआ है, जिससे पारंपरिक रीति-रिवाजों का स्वरूप बदलने लगा है। भूमण्डलीकरण के साथ, भोजपुरी लोक संस्कृति पर पॉप संस्कृति का प्रभाव भी पड़ा है, जो उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के माध्यम से स्थानीय संस्कृति को चुनौती दे रही है। पारंपरिक त्यौहारों और संस्कारों में तेजी से बदलाव आ रहे हैं, और यह चिंता भी उभर रही है कि बाजार की शक्तियाँ लोकसंस्कृति की सार्थकता को कमजोर कर सकती हैं। फील्ड वर्क के आंकड़ों के आधार पर, 69% लोग मानते हैं कि उनकी संस्कृति और रहन-सहन में हो रहे परिवर्तन सही दिशा में हैं, जबकि 88% लोगों ने सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। यह दर्शाता है कि कुशीनगर के लोग आधुनिकता को स्वीकार कर रहे हैं, लेकिन वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों को भी संरक्षित करना चाहते हैं।

भूमण्डलीकरण के बाद, ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन की प्रवृत्ति बढ़ी है, विशेषकर युवाओं में शहरी जीवन की ओर आकर्षण बढ़ा है। जबकि 67% लोग गाँव को अपनी पसंदीदा जगह मानते हैं, शहरीकरण की ओर बढ़ते कदमों से ग्रामीण जीवन की स्थानीयता और पारंपरिक मूल्यों में कमी आ रही है। भोजपूरी

विवाह, जन्म और मृत्यु से जुड़े संस्कारों में भूमण्डलीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से कई बदलाव आए हैं। जैसे कि विवाह की विधियों में शहरीकरण के चलते पारंपरिक रस्मों का रूपांतरण हुआ है। इसके साथ ही, प्रेम विवाह और दहेज प्रथा के खिलाफ जागरूकता ने भी इन संस्कारों को प्रभावित किया है। भोजपूरी समाज में बाल विवाह, वृद्ध विवाह और छुआछूत जैसी कुरीतियाँ प्रमुख थीं, लेकिन भूमण्डलीकरण और शिक्षा के प्रसार से इनमें कमी आई है। कृषि और यात्रा से जुड़े लोक विश्वास भी धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे हैं, लेकिन कुछ पारंपरिक मान्यताएँ अब भी समाज में जीवित हैं। भूमण्डलीकरण के चलते भोजपुरी समाज के व्रत और त्यौहारों में आधुनिकता का समावेश हुआ है। पसमांदा मुसलमानों का लोक संस्कृति में योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है, लेकिन नई पीढ़ी में इन परंपराओं का महत्व कम हो रहा है। भूमण्डलीकरण ने भोजपूरी समाज के खान-पान को भी प्रभावित किया है। पारंपरिक भोज जैसे मकुनी, पूआ, ठेकुआ, रसियाव आदि की जगह अब पिज्जा, बर्गर और अन्य फास्ट फूड ने ले ली है। साथ ही, विदेशी मिष्ठान्न और फलों की मांग भी बढ़ी है।

भूमण्डलीकरण ने पारंपरिक आंचलिक खेलों को हाशिए पर ला दिया है। क्रिकेट जैसे वैश्विक खेल अब ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुखता से खेले जाते हैं, जबकि स्थानीय खेल जैसे आईस-पाईस, खूजाकाट, और ओका-बोका धीरे-धीरे गायब हो रहे हैं। मोबाइल फोन और इंटरनेट की उपलब्धता ने मोबाइल गेम्स को भी लोकप्रिय बना दिया है। PUBG, Free Fire, और Candy Crush जैसे गेम्स ने युवाओं और बच्चों के बीच अपनी जगह बना ली है। कुशीनगर की पारंपरिक नौटंकी और नाच भूमण्डलीकरण के प्रभाव में आई आधुनिक मनोरंजन के साधनों के कारण लोकप्रियता खो रही हैं। हालांकि भिखारी ठाकुर जैसे कलाकारों ने नौटंकी के माध्यम से सामाजिक संदेश दिए, पर अब सिनेमा, टेलीविजन, और डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के चलते इन पारंपरिक कलाओं की उपस्थिति सीमित होती जा रही है। नौटंकी को आधुनिक तकनीकों और डिजिटल प्लेटफार्मों पर प्रस्तुत करने की कोशिश की जा रही है, लेकिन इसे पुनः मुख्यधारा में लाने के लिए और अधिक प्रयास की आवश्यकता है। भूमण्डलीकरण के दौर में भोजपुरी सिनेमा ने अपने दर्शकों के लिए नए विषयों और शैलियों को अपनाया है। पहले जहाँ सिनेमा में सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित फिल्में होती थीं, अब भोजपुरी फिल्मों में ग्लोबल संस्कृति का भी प्रभाव देखा जा रहा है। फ़िल्में जैसे "ससुरा बड़ा पइसा वाला" और "निरहुआ चलल लंदन" इस बदलाव का उदाहरण हैं। हालांकि पारंपरिक ग्रामीण दर्शकों के लिए सिनेमा में स्थानीयता का भाव अभी भी महत्वपूर्ण है।

भूमण्डलीकरण के दौर में कुशीनगर की अर्थव्यवस्था पर बाज़ार का गहरा प्रभाव पड़ा है। कृषि अर्थव्यवस्था तथा कृषि संरचना में 1991 के बाद बड़े बदलाव देखने को मिले। धान का उत्पादन क्षेत्र 1993-94 में 118,199 हेक्टेयर था, जो 2018-19 में 113,863 हेक्टेयर रह गया। गेहूं का क्षेत्र 1993-94 में 102,817 हेक्टेयर था, जो 2013-14 में 116,559 हेक्टेयर तक बढ़ने के बाद 2018-19 में 115,335 हेक्टेयर पर आ गया। जौ 1993-94 में 265 हेक्टेयर था, जो 2018-19 में घटकर 70 हेक्टेयर रह गया। नगदी फसल गन्ने का क्षेत्र 1993-94 में 71,075 हेक्टेयर था, जो 2018-19 में बढ़कर 72,889 हेक्टेयर हो गया। अर्थात धान और गेहूं का उत्पादन क्षेत्र में लगभग निरंतरता बनी रही लेकिन मोटे अनाज जैसे जौ बाजरा दलहन तथा तिलहन में गिरावट देखी गई है। गन्ने तथा आलू जैसी फसलों के उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि देखी गई है। सिंचाई के साधनों में राजकीय और निजी नलकूपों की संख्या में बढ़ोतरी हुई, जबकि नहरों की लंबाई में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। 2019-20 तक निजी नलकूपों की संख्या 65,750 हो गई, जिससे सिंचाई में सुधार हुआ।

खेती की जोतें छोटी होती गईं, जिससे गैर-कृषि व्यवसायों का विकास हुआ। किसान अब खेती के अलावा अन्य रोजगार, जैसे ईंट भट्ठों, छोटे व्यापार, और सेवाओं की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। गैर-कृषि व्यवसायों में जाति भी एक निर्णायक कारक रही है, जिसमें ऊँची जातियों के लोग स्थायी व्यवसायों में अधिक रुचि दिखाते हैं। मॉल तथा ब्रांड संस्कृति कुशीनगर जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में मॉल और ब्रांड संस्कृति का प्रवेश हाल के वर्षों में देखा गया है। कुशीनगर के प्रमुख शहरों में मॉल्स जैसे पी डी सिटी मॉल, विशाल मेगा मार्ट, और विभिन्न ब्रांड्स के शोरूम खुल गए हैं, जिसने पारंपरिक बाजारों को चुनौती दी है। युवा पीढ़ी अब ब्रांडेड उत्पादों की ओर अधिक आकर्षित हो रही है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार 28% लोग ब्रांड को प्राथमिकता दे रहे हैं, जबकि 36% लोग अभी भी मूल्य और गुणवत्ता पर ध्यान देते हैं। अमेज़न और फ्लिपकार्ट जैसी ऑनलाइन शॉपिंग सेवाएं और ज़ोमैटो जैसी खाद्य वितरण सेवाओं ने भी कुशीनगर के उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव लाया है।

भूमण्डलीकरण के दौर में कुशीनगर जिले में मूलभूत सुविधाओं को देखें तो कुशीनगर जिले में सरकारी और निजी स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार तो हुआ है, लेकिन सेवाओं की गुणवत्ता और संसाधनों की कमी आज भी बनी हुई है। 1994-95 से 2019-20 तक एलोपैथिक चिकित्सालयों की संख्या में वृद्धि

हुई है, लेकिन डॉक्टरों और पैरा-मेडिकल स्टाफ की कमी बनी हुई है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता प्रभावित होती है। बाल कुपोषण, मातृ और शिशु मृत्यु दर भी राष्ट्रीय औसत से अधिक है, जो प्रसव के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता के कारण होता है। मलेरिया, डेंगू, और टाइफाइड जैसी बीमारियां साल भर में फैलती रहती हैं, जिसका कारण स्वच्छता की कमी और दूषित जल है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार 42% लोग सरकारी अस्पतालों पर भरोसा करते हैं, लेकिन 64% लोग निजी अस्पतालों को गुणवत्ता और सुविधा के लिए पसंद करते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं में बढ़ती असमानता, सरकारी सेवाओं की सीमित गुणवत्ता, और निजी सेवाओं का महंगा होना इस क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। कुशीनगर में शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी और निजी संस्थानों के बीच असमानता बढ़ रही है। सरकारी विद्यालयों में नामांकन घट रहा है, जबकि निजी विद्यालयों में नामांकन बढ़ रहा है। प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में वृद्धि तो हुई है, लेकिन माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई। प्राइवेट स्कूलों में अधिकतर लड़कों का नामांकन हो रहा है, जबकि लड़कियाँ अब भी सरकारी विद्यालयों पर निर्भर हैं। शिक्षा का स्वरूप अब ज्ञान से अधिक सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक अवसरों से जुड़ गया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में असमानता बढ़ रही है। भूमण्डलीकरण के प्रभाव से अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई है, जिससे ग्रामीण समाज में भाषा और शिक्षा के स्तर पर एक नया विभाजन उभर रहा है।

कृषि में लगे लोगों की संख्या में गिरावट देखी जा रही है। अब लोग अन्य व्यवसायों की ओर रुख कर रहे हैं, जबकि सरकारी और निजी नौकरियों की सीमित संख्या बनी हुई है। स्व-रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं, खासकर तकनीकी क्षेत्र में। मनरेगा जैसी योजनाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का प्रमुख साधन बनी हुई हैं, लेकिन यह योजना भी अपनी सीमाओं के कारण पूर्ण रूप से प्रभावी नहीं हो पाई है। अंग्रेजी जानने वाले युवाओं के लिए रोजगार के अवसर अधिक हैं। 74% लोग मानते हैं कि अंग्रेजी भाषा जानने से रोजगार की संभावनाएं बढ़ जाती हैं, जो भूमण्डलीकरण के प्रभाव को दर्शाता है। कुशीनगर जिले में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण 47% परिवारों का कोई न कोई सदस्य रोजगार की तलाश में बाहर पलायन कर चुका है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी अन्य राज्यों और देशों में नौकरियों के लिए पलायन कर रही है। सर्वे के अनुसार 86% लोग मानते हैं कि अगर उन्हें अपने जिले में रोजगार के अवसर मिलें, तो उन्हें बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होगी। अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन भी बढ़ रहा है, खासकर खाड़ी देशों में, जहां से बड़ी मात्रा में

धनराशि आ रही है। पलायन से ग्रामीण समाज में पारिवारिक ढाँचे और श्रम बाजार पर असर पड़ा है। श्रमिकों की कमी के कारण कृषि प्रभावित हो रही है, और सामाजिक बंधन कमजोर हो रहे हैं।

भूमण्डलीकरण के प्रभावों ने कुशीनगर जिले के बुनियादी ढांचे, विशेष रूप से सड़कों के विकास पर गहरा असर डाला है। ग्रामीण सड़कों की लंबाई 1993-94 में 572 किमी थी, जो 2021-22 तक 5217 किमी तक पहुँच गई। इसका सीधा असर स्थानीय अर्थव्यवस्था और जनसामान्य की जीवनशैली पर पड़ा है। बेहतर सड़कें किसानों को अपनी उपज बाजारों में तेज़ी से पहुँचाने में मददगार साबित हुई। इसके अलावा, पर्यटन और व्यापार में वृद्धि ने रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं। सड़कों के विकास ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को भी सुगम बनाया, जिससे ग्रामीण इलाकों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। मोटरबाइक ने कुशीनगर जिले के ग्रामीण जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदारीकरण के बाद मोटरबाइक ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से फैल गई है, और अब लगभग 70% परिवारों के पास मोटरबाइक उपलब्ध है। यह सिर्फ परिवहन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक भी बन गई है। पहले जहां साइकिल और पैदल यात्रा ही मुख्य साधन थे, अब मोटरबाइक ने यात्रा का समय घटा दिया है और व्यापारिक गतिविधियों में तेजी लाई है। कृषि और छोटे व्यवसाय में मोटरबाइक ने नए आयाम स्थापित किए हैं। किसान मोटरबाइक का उपयोग करके अपने उत्पाद बाजार तक पहुंचा रहे हैं। महिलाओं की गतिशीलता में भी वृद्धि हुई है, जिससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता में सुधार हुआ है। मोटरबाइक ने चुनावी प्रक्रिया में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जहां राजनीतिक अभियानों में इसे प्रचार और मतदाताओं को संगठित करने के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। स्मार्टफोन और इंटरनेट ने कुशीनगर के ग्रामीण क्षेत्रों में एक क्रांति ला दी है। अनुमानित रूप से 70% लोगों के पास स्मार्टफोन हैं, जबकि साधारण मोबाइल फोन 85% लोगों के पास हैं। मोबाइल और इंटरनेट ने न केवल संचार को सुगम बनाया है, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा किए हैं। युवा अब ऑनलाइन व्यापार, मोबाइल रिपेयरिंग, और डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हो रहे हैं। कृषि में भी मोबाइल ने बदलाव लाए हैं, जहां किसान बाजार के भाव, मौसम की जानकारी आदि प्राप्त कर रहे हैं। इसके अलावा, मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को भी बढ़ा रहा है। स्मार्टफोन ने युवाओं की जीवनशैली और सांस्कृतिक रुझान को भी प्रभावित किया है, जो अब शहरी फैशन और संगीत की ओर अधिक झुके हुए हैं। सोशल मीडिया ने कुशीनगर जिले के ग्रामीण इलाकों में गहरा प्रभाव डाला है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, 68% लोग

सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जानकारी तेजी से प्राप्त हो रही है, जिससे स्थानीय राजनीति, संस्कृति, और व्यापार से जुड़े मुद्दों पर संवाद और जागरूकता बढ़ी है। सोशल मीडिया ने धार्मिक और जातिगत समूहों में भागीदारी भी बढ़ाई है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, 22% लोग धार्मिक समूहों से जुड़े हैं और 12% लोग जातिगत समूहों से। इससे संकेत मिलता है कि सोशल मीडिया धार्मिक और जातिगत संबंधों को डिजिटल रूप से प्रभावित कर रहा है। इसके अलावा, 60% लोगों का मानना है कि मोबाइल के आने से लड़के और लड़कियों के बीच संवाद और पारस्परिक संबंधों में सुधार हुआ है। कुल मिलाकर, कुशीनगर जिले में सड़कों, मोटरबाइक, मोबाइल फोन, और सोशल मीडिया का प्रसार भूमण्डलीकरण के प्रभावों का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इन साधनों ने न केवल जिले की कनेक्टिविटी, रोजगार के अवसरों, और जीवनशैली में सुधार किया है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे में भी गहरे बदलाव लाए हैं।

भूमण्डलीकरण के दौर में कुशीनगर जिले के समाज में जाति, वर्ग, धर्म, जेंडर और सत्ता संरचनाओं में कई बदलाव हुए हैं, जो विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित हैं। भूमण्डलीकरण के कारण जाति आधारित श्रम विभाजन में गिरावट आई है। जहां पहले निम्न जातियाँ कृषि और पारंपरिक पेशों तक सीमित थीं, अब वे अन्य रोजगार क्षेत्रों, जैसे निर्माण, खुदरा, और अन्य सेवाओं में प्रवेश कर रही हैं। शिक्षा के प्रसार के साथ, निम्न जातियों के लोगों को सामाजिक और आर्थिक उन्नति के अवसर मिल रहे हैं। जातिगत असमानता में गिरावट देखने को मिली है, और जातिगत पहचान में लचीलापन आया है। पंचायती राज और स्थानीय चुनावों ने निम्न जातियों को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने में मदद की है। कुशीनगर में दलित और पिछड़ी जातियाँ अब राजनीतिक रूप से संगठित हो रही हैं। हालांकि जातिगत प्रभुत्व कमजोर हुआ है, फिर भी जातिगत अत्याचार और भेदभाव अभी भी विद्यमान हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जातिगत विभाजन अब भी एक चुनौती बना हुआ है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार 52% लोग अंतरजातीय विवाह का विरोध करते हैं। हालांकि, 34% लोग इसे सही मानते हैं, जो सामाजिक संरचना में आ रहे बदलावों को दर्शाता है।

भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप, कुशीनगर जिले में वर्गीय संरचनाएं और आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने गांव के पारंपरिक आर्थिक ढांचे को चुनौती दी

है, जिसके कारण वर्गीय विभाजन और गहरा हुआ है। कुशीनगर में किसान, मजदूर, व्यापारी, उद्योगपति, और अमीर-गरीब के बीच की खाई विस्तृत होती जा रही है। छोटे और सीमांत किसानों की संख्या बढ़ने के बावजूद उनके लिए लाभदायक खेती संभव नहीं हो पा रही है। 86% किसान सीमित संसाधनों और तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। भूमण्डलीकरण ने ग्रामीण मजदूरों के रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं, लेकिन ये अवसर अस्थायी और असुरक्षित हैं। प्रवासन ने मजदूर वर्ग को दो भागों में बाँट दिया है—जो बाहर काम करते हैं और जो गाँव में अनिश्चित कृषि मजदूरी पर निर्भर रहते हैं। भूमण्डलीकरण ने स्थानीय व्यापार और उद्योग में नए अवसर उत्पन्न किए हैं, लेकिन यह लाभ मुख्य रूप से बड़े व्यापारियों और उद्योगपतियों तक सीमित है। छोटे व्यापारी अब अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के कारण चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। भूमण्डलीकरण ने अमीर और गरीब वर्ग के बीच की खाई को और गहरा किया है। अमीर वर्ग वैश्विक बाजारों का लाभ उठा रहा है, जबकि गरीब वर्ग असुरक्षा और आर्थिक असमानता का सामना कर रहा है।

भूमण्डलीकरण ने कुशीनगर में धार्मिक अनुष्ठानों को सामाजिक और राजनीतिक शक्ति का प्रतीक बना दिया है। कावड़ यात्रा, शिव चर्चा, और दुर्गा पूजा जैसे अनुष्ठान अब सामाजिक और राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन के माध्यम बन गए हैं। कुशीनगर बौद्ध धार्मिकता का वैश्विक केंद्र है। बौद्ध पर्यटन के बढ़ने से स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ हुआ है, लेकिन यह धार्मिक स्थलों के व्यावसायीकरण की ओर भी इशारा करता है। वैश्विक इस्लामिक संस्कृति के प्रभाव से कुशीनगर के मुस्लिम समाज में धार्मिकता के नए आयाम उभर रहे हैं। विशेषकर प्रवासन और इंटरनेट के माध्यम से धार्मिक शिक्षाओं का प्रसार तेज हो गया है। 62% लोग अंतर्धार्मिक विवाह का विरोध करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक सीमाएँ समाज में अभी भी महत्वपूर्ण हैं।

प्रवासन के कारण कृषि का स्त्रीकरण हुआ है, जिससे महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता बढ़ी है। हालांकि, महिलाओं के पास आर्थिक संसाधनों की कमी अभी भी सशक्तिकरण की राह में बाधा है। लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान बढ़ा है, जिससे महिलाएँ विवाह और कार्यक्षेत्र में अपनी पसंद का दावा कर रही हैं। लेकिन विवाह प्रथाओं में पितृसत्तात्मक नियंत्रण बना हुआ है। सोशल मीडिया और स्मार्टफोन के प्रसार ने महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता दी है, लेकिन इसके साथ ही ऑनलाइन उत्पीड़न और ट्रोलिंग

जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। भूमण्डलीकरण के बावजूद, पितृसत्तात्मक संरचनाएँ अभी भी ग्रामीण समाज में मजबूत हैं। भूमि स्वामित्व और सामाजिक रीति-रिवाजों में महिलाओं की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है।

भूमण्डलीकरण और पंचायत व्यवस्था के सशक्तिकरण ने कुशीनगर जिले में जातिगत प्रभुत्व को कमजोर किया है। हालांकि, उच्च जातियों का प्रभाव अभी भी सत्ता संरचना में बना हुआ है। पंचायत राज ने पिछड़ी जातियों और दलितों को सत्ता में भागीदारी का अवसर दिया है, लेकिन सत्ता का विकेंद्रीकरण अभी भी आंशिक है। ठेकेदारी और सरकारी योजनाओं से जुड़े व्यवसायिक गतिविधियों के कारण सत्ता के नए केंद्र उभर रहे हैं, जिससे सत्ता का पुनर्वितरण हो रहा है। भूमण्डलीकरण के साथ कुशीनगर में आर्थिक ताकतों का प्रभाव बढ़ा है। 58% लोग मानते हैं कि पैसे वालों को सबसे ज्यादा सम्मान मिलता है, जिससे आर्थिक शक्तियों का बढ़ता महत्व स्पष्ट होता है। भूमण्डलीकरण ने कुशीनगर जिले के समाज में गहरे बदलाव लाए हैं। जाति, वर्ग, धर्म, जेंडर और सत्ता संरचनाओं में बदलाव के बावजूद, परंपरागत असमानताएँ अब भी बरकरार हैं। सामाजिक संरचनाओं में सुधार की दिशा में और कदम उठाने की जरूरत है ताकि समाज में समावेशिता और समानता को बढ़ावा मिल सके।

इस प्रकार भूमण्डलीकरण के दौर में कुशीनगर जिले में गहरे सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक बदलाव देखने को मिले। जहां एक ओर इसने कृषि और छोटे व्यापारों के अस्तित्व पर खतरे पैदा किए, वहीं दूसरी ओर यह तकनीकी नवाचार, प्रवास, और नगरीकरण के नए अवसर भी लाया। कुशीनगर की ग्रामीण आबादी ने वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सरकारी सब्सिडी की कमी के कारण अपनी आजीविका में असुरक्षा महसूस की। पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास और सामाजिक असमानताओं ने भी इस दौर को चुनौतीपूर्ण बनाया। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण ने गरीब वर्ग के लिए नई समस्याएं खड़ी कीं। हालांकि, प्रवास से प्राप्त धन, कृषि में तकनीकी सुधार, और महिलाओं के सशक्तिकरण ने आर्थिक स्थिति को कुछ हद तक मजबूत किया। भूमण्डलीकरण के इन प्रभावों ने कुशीनगर के सामाजिक ताने-बाने को पुनर्गठित किया, लेकिन जातिगत भेदभाव, वर्गीय असमानताएं, और सांस्कृतिक क्षति जैसी समस्याएं अब भी गहरी बनी हुई हैं।

इस प्रकार इस शोध के निष्कर्ष कुछ धारणाओं, आशंकाओं तथा पूर्वाग्रहों का खंडन करते हैं। पूंजीवाद तथा उदारवाद के समर्थकों जैसे थॉमस फ्रीडमैन का यह कथन पूरी तरह से सही नहीं है कि भूमण्डलीकरण अन्य समाजों पर एकतरफा और निष्ठुर प्रभाव डाल रहा है या हटिंगटन का यह कहना कि अमेरिकी मॉडल सबसे बेहतर विकल्प है इसलिए सभी समाजों को इस एक सांचे में ढ़लना होगा, या हेनरी किसिंजर की यह चाहत कि भूमण्डलीकरण को अमेरिकीकरण कहा जाये। मार्क्सवादी रुझान वाले विचारकों जैसे एंटोनियो नेग्री तथा लेस्ली स्केलेयर इत्यादि के द्वारा भूमण्डलीकरण को एक षड़यंत्रकारी परियोजना मानना भी ठीक नहीं है। जोसेफ ई. स्टिग्लिट्ज़, मिशेल चोसुदोब्सकी तथा दानी रोड्रिक की आशंकाओं तथा आलोचनाओं के कारण हम अपने को कछुए की तरह समेट नहीं सकते ना ही ऐसा करना संभव है। यह शोध भारतीय गांवों पर मार्क्स जैसे विद्वाओं के प्राच्यवादी पूर्वाग्रह "अपरिवर्तनशील विशिष्ट एशियाई उत्पादन पद्धति" की धारणा का भी खंडन करती है। इस शोध के निष्कर्ष डॉ. अम्बेडकर की उस आशंका को भी दरकिनार करते हैं जिसके अनुसार गाँवों को प्रशासनिक इकाई नहीं बनाना चाहिए।

यह शोध कुछ वैश्विक धारणाओं का समर्थन करता है या साम्यता रखता है। ज़िगमंट बाउमन और रित्ज़र की तरलता और गतिशीलता, अर्जुन अप्पादुरई की आधुनिकता का विस्तार, डेविड हार्वे का देश-काल संपीडन तथा एंथनी गिडेंस के जड़ों का निर्मूलन के सिद्धांत से शोध वैचारिक साम्यता रखता है। यह शोध जोसेफ ई. स्टिग्लिट्ज़ की इस बात से इनकार नहीं करता कि भूमण्डलीकरण किसी के लिए तथा किसी के विरुद्ध है परन्तु शोध को जगदीश भगवती की यह बात ज्यादा सटीक लगती है कि भूमण्डलीकरण एक खेल की तरह है, आप जीतते हैं क्योंकि आपकी तैयारी अच्छी है आप हार जाते हैं क्योंकि आपकी तैयारी अच्छी नहीं है, आप अपनी हार या किसी की जीत के लिए खेल के नियमों को दोष नहीं दे सकते। इस शोध का निष्कर्ष राष्ट्र राज्य को उसके इस दायित्व की भी याद दिलाता है कि उसे सामाजिक-आर्थिक विकास के अपने लक्ष्य के साथ ही अपने नागरिकों को एडम स्मिथ के बाज़ार के अदृश्य हाथ से भी बचाना है ताकि वह इसके अपने किसी कमजोर नागरिक का गला न दबा पाए।